कोटा मेडिकल कॉलेज के माइक्रो-बॉयलोजी विभाग में जीन सीक्वेंसिंग यूनिट में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

यह बहुत बड़ा ऐतिहासिक दिन है। अलग-अलग वैरिएंट आने के कारण और उनकी पहचान न होने के कारण, उनकी जांच में लंबा समय लगने के कारण, कई बार चिकित्सक इलाज की सही दिशा को नहीं पकड़ सकता था, लेकिन आज जीन सीक्वेंसिंग यूनिट द्वारा, जो नए वैरिएंट आते हैं, नए वैरिएंट की जानकारी और उस वैरिएंट की जानकारी के बाद हम सही दिशा में इलाज कर पाएं। हम सबको पता है कि देश और दुनिया के अंदर बीमारियां, मौसमी बीमारियां के साथ-साथ कई वैरिएंट के कारण भी बहुत बड़ी महामारी आती है। हमने कोरोना वैश्विक महामारी में देखा है कि एक वैरिएंट कोविड के कारण पूरी दुनिया प्रभावित हुई। सामाजिक रूप से, आर्थिक रूप से भी प्रभावित हुई और कई परिवारों के लोग हमारे बीच में नहीं रहे।

हमारे चिकित्सकों ने, हमारे नर्सिंग स्टाफ ने, हमारे अटेंडेंट्स ने, सफाईकर्मियों ने, सभी चिकित्सा क्षेत्र में काम करने वाले लोगों ने जिस त्वरित गति से कार्य किया, जिस समर्पण सेवा से काम किया, अपनी जान की परवाह किए बिना, कोविड के समय लाखों लोगों की जिंदगी बचाने का काम किया, वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं। इसी कारण चिकित्सकों का सम्मान भारत में और बढ़ा है।

इस सब कोरोना महामारी के कारण हमें एक सीख मिली, एक दिशा दी गई कि कभी भी कोई भी वैरिएंट दुनिया के अंदर आ सकता है। उस वैरिएंट के आने के बाद हमारी चिकित्सा इन्फ्रास्ट्रक्चर की तैयारी होनी चाहिए, उस दिशा के अंदर हमने तैयारियां शुरू कर दी हैं। हमारे चिकित्सा इन्फ्रास्ट्रक्चर को हम इस तरीके से तैयार कर रहे हैं कि कोई भी वैरिएंट आए, उस वैरिएंट की जानकारी चिकित्सकों को मिल जाए और उसके बाद उस मरीज का इलाज हो पाए।

कोरोना वैरिएंट एक वैरिएंट है, उसके बाद और वैरिएंट आ सकते हैं। भगवान करे, वैरिएंट नहीं आएं, लेकिन हमें तो चिकित्सा के नए अनुसंधानों, नई रिसर्चों के आधार पर हमेशा भविष्य की तैयारियों को करके रखना पड़ेगा। इसी का एक मूल जो लैबोरेटरी है, माइक्रो-बॉयलोजी विभाग ने आवश्यकता महसूस की थी कि एक जीन सीक्वेंसिंग

यूनिट होनी चाहिए, ताकि हम वैरिएंट की जानकारी प्राप्त कर सकें। इसी तरीके से विडियालैब, वायरस की जानकारी के लिए जो-जो संसाधन उपलब्ध कराना है, उसकी भी शुरूआत हमने कर दी है। उसी के साथ-साथ बीएसएल थ्री प्लस लैब, इसकी बहुत समय से मांग थी। पहले सरकार ने यहां पर बीएसएल टू लैब स्वीकृत की थी, लेकिन हमारे प्राचार्य सरदाना साहब बड़े सक्रिय प्राचार्य हैं। उन्होंने मुझे जानकारी दी कि अगर बीएसएल थ्री प्लस लैब आ जाए तो हम इबोला, निबाय जैसे वायरस की जांच भी यहां कर पाएंगे। हमें इन वायरसों की जांच करने के लिए कभी पूना, कभी बम्बई, कभी दिल्ली और कुछ चीजों को जयपुर भेजना पड़ता था। उसकी जांच में एक-दो दिन का समय लग जाता था, तब तक उस वैरिएंट का प्रभाव बढ़ने के कारण मरीज और सीरियस हो जाता था।

ये सब संसाधन उपलब्ध होने से हम भविष्य के अंदर कभी हद तक जांचें यहां कर पाएंगे। भविष्य में हमारी कोशिश है कि जो दुनिया के अंदर बेहतरीन जांचें हो सकते हैं, हम किस तरीके से सरकार से, जन-सहयोग के माध्यम से वे सब लैब, वे सभी संसाधन यहां उपलब्ध करायें। कोटा में हाड़ोती ही नहीं, पूरे मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के सटे हुए इलाके के लोग यहां इलाज कराने आते हैं। यहां के चिकित्सकों की विशिष्टता, प्रमाणिकता, सस्ता इलाज, जिसके कारण कई बार मध्य प्रदेश के मरीज भी मुझसे सम्पर्क करते हैं। मध्य प्रदेश के तो बहुत बड़ी संख्या में इलाज कराने लोग यहां पर आते हैं।

इस कॉलेज ने बहुत अच्छी प्रगति की है। अभी प्राचार्य महोदय मुझे बता रहे थे, डायरेक्टर जनरल ऑफ हेल्थ सर्विस ने जो रैंकिंग निकाली, उस रैंकिंग के अंदर हम बहुत सालों से स्थपित मेडिकल कॉलेजों से आगे आ चुके हैं। एम्स के जोधपुर से भी आगे आ चुके हैं। यह हमारे चिकित्सकों के यहां के चिकित्सा इन्फ्रास्ट्रक्चर की एक शक्ति है, क्योंकि इन्फ्रास्ट्रक्चर आप कितना भी तैयार कर दो, मैं देखता हूं कि तीन हजार बेड के मेडिकल कॉलेज बहुत कम हैं। तीन हजार बेड कम नहीं होते हैं, लेकिन इन्फ्रास्ट्रक्चर कितना भी तैयार कर लो, लेकिन जब तक चिकित्सक बेहतरीन तरीके से और सेवा से काम नहीं करेंगे, हम परिणाम नहीं दे सकते हैं।

आपने जिस समर्पण सेवा से काम किया, इसके कारण हमारी रैंकिंग सुधरी है। हमें और सुधार करने की आवश्यकता है। विशेष रूप से मैं धन्यवाद दूंगा कि यहां पर किडनी ट्रांसप्लांट होने लगे, घुटने के ट्रांसप्लांट होने लगे। कभी हमें हार्ट के लिए प्राइवेट अस्पतालों में जाना पड़ता था, अब हमारी कैथ लैब भी स्थापित हो चुकी है।

सुपर स्पेशलिस्ट सेवाओं के रूप में हम लगातार आगे बढ़ रहे हैं। हमारी कोशिश तो है कि आने वाले समय में जितने भी अंग प्रत्यारोपण होने वाले हैं, उसकी एक यूनिट यहां पर बने और एक बेहतरीन सर्विस यहां पर दे सकें।

हमारे सपने तो बहुत बड़े हैं। हमारे सपने तो जो देश के अंदर बड़े हॉस्पिटल और निजी अस्पताल में होते हैं, वह हम कोटा मेडिकल कॉलेज में करने के सपने देखते हैं। सपने जब बड़े देखेंगे, तो उसको प्राप्त करने के लिए उतने ही प्रयास करेंगे। जितनी अपेक्षायें, आकांक्षायें लोगों की होंगी, उतनी अपेक्षायें और आकांक्षाओं को हम पूरा करने का काम करेंगे। इसीलिए हमारी कोशिश है कि यह मेडिकल कॉलेज सर्वश्रेष्ठ मेडिकल कॉलेज बने। विशेष रूप से मेरा यहां पर इतना ही आग्रह है कि हमें इमरजेंसी यूनिट ऐसी बनानी चाहिए, क्योंकि इमरजेंसी के अंदर कभी भी कोई इमरजेंसी होती है, तो सबसे पहले वह सरकारी हॉस्पिटल में आता है, चाहे एमबीएस में आए, चाहे न्यू मेडिकल कॉलेज में आए। हमारी इमरजेंसी के अंदर अगर हमने त्वरित रूप से उसका उपचार कर दिया और किसी व्यक्ति का उपचार कर उसकी जान बचा ली, तो इससे बड़ा पुण्य का काम कुछ नहीं हो सकता है।

प्रिंसिपल साहब, मेरा यह आग्रह है कि इमरजेंसी यूनिट्स कैसे बढ़ानी चाहिए, इस पर विचार करना चाहिए। ऐसा इन्फ्रास्ट्रक्चर तैयार करना चाहिए, जिसके अंदर इमरजेंसी में सभी विभागों के चिकित्सक उपलब्ध हों। यहां पर पीजी के अंदर 186 सीटें आ चुकी हैं, सुपर स्पेशिलिस्ट में भी 12 सीटें आ चुकी हैं, हर सैक्टर के अंदर सीटें आ चुकी हैं, और भी सीटें आने की संभावना है। हम कोशिश करेंगे कि यहां सुपर स्पेशलिस्ट में और सीटें मिलें, हर डिपार्टमेंट को मिले।

कैंसर का जहां तक सवाल है, तो कैंसर की एक बड़ी यूनिट यहां बननी चाहिए। हाड़ोती के अंदर कैंसर की बहुत बड़ी सम्भावना है। अभी टाटा कंसल्टेंसी यहां पर सब चीजों को देखकर गई है। मेरी प्राचार्य महोदय से बात हुई है। आप निश्चित मानिए, मेरी कोशिश है कि कैंसर की एक बेहतरीन यूनिट, जो देश में सबसे बढ़िया यूनिट है, वह हम कोटा में लगाने के प्रयास को बहुत जल्दी पूरा कर पाएंगे।

इसी तरीके से यहां पर प्राइवेट वार्ड के बारे में भी चर्चा हुई। मैं विधायक महोदय को धन्यवाद दूंगा कि उन्होंने डेढ़ करोड़ रुपये दिए। मैंने प्राचार्य महोदय से कहा कि इसका पूरा का पूरा एक प्रोजेक्ट बनायें। सौ बेड के प्राइवेट रूम्स बनायें, ताकि किसी भी व्यक्ति को प्राइवेट अस्पताल में इलाज कराने न जाना पड़े। उसको यहीं पर

सुविधायें मिलें। उस प्रोजेक्ट में चाहे 10, 15 या 20 करोड़ रुपये लगें, जितना भी पैसा लगेगा, पैसे का कोई अभाव नहीं आएगा। हमारी कोशिश है कि वर्ष 2023 में इसकी शुरुआत कर दें, नहीं तो वर्ष 2024 में तो इसकी शुरुआत कर ही दें।

हम इसको एक बेहतरीन यूनिट बना सकें, ताकि हमारी जो सब आवश्यकतायें हैं, जो एक सामान्य हॉस्पिटल में आवश्यकतायें होती हैं, वे सब आवश्यकतायें इस मेडिकल कॉलेज में हो जाएं। हमारा प्रयास तो वहां तक चल रहा है कि दूर-दराज के गांवों के अंदर, मैं देखता हूं कि कई बार दूर-दराज के गांवों के अंदर मरीज को चिकित्सा की, बीमारी की जानकारी नहीं होती है और जानकारी होती है तो कई बार धन का अभाव होता है। इसलिए हमने प्रयास किया है कि तमाम कोटा, बूंदी संसदीय क्षेत्र के अंदर मेडिकल वैन, चल-चिकित्सालय, जो उनके घर तक जाएगा और प्रारंभिक जांच करेगा। प्रारंभिक जांच में जो गम्भीर बीमारी होने की सम्भावना होगी या जिसकी जांच में कुछ ऐसी कमी आएगी कि इसको हमें मेडिकल कॉलेज में दिखाना है, जयपुर में दिखाना है, दिल्ली में दिखाना है, वह करेंगे, ताकि हम आने वाले समय के अंदर दूर-दराज के गांव के व्यक्ति को भी स्वस्थ रख सकें और इसलिए उसके घर तक चल-चिकित्सालय जाएगा।

आने वाले समय में 6 महीने के अंदर लीवर की जांच की एक मोबाइल वैन भी यहां पर आने वाली है। लीवर के कारण भी काफी बीमारियां होती हैं। इसमें करीब 70 लाख रुपये के इक्विपमेंट्स लगेंगे। एक करोड़ रुपये की वह बस होगी। वह भी गांव-गांव में जाएगी और लीवर जांच की जो भी की संभावनायें भविष्य में दिखती हैं, उनकी जांच होगी। उसके लिए जो सुपर स्पेशलिस्ट डाक्टर्स हैं देश के अलग-अलग हिस्सों के, वे समय-समय पर 6 महीने के अंदर एक बार आकर यहां पर लीवर की जांच भी करेंगे।

कैंसर की जांच के लिए भी मोबाइल वैन चलाने का इरादा है। गांव-गांव के अंदर ब्रेस्ट कैंसर, अन्य कैंसर जो महिलाओं को होते हैं, उनकी जानकारी उन्हें नहीं होती हैं। जानकारी के अभाव के कारण कई बार कैंसर बढ़ जाता है। मैंने देखा कि गांव के अंदर कई बार बीमारियों की जानकारी नहीं होती है और बीमारी इतनी बढ़ जाती है कि उसका इलाज करना सम्भव नहीं हो सकता है। अगर प्रारंभिक रूप से ही इलाज और उस बीमारी की जानकारी मिल जाए तो निश्चित रूप से हम उसको इलाज करके स्वस्थ रखेंगे।

इसलिए हर गांव, हर व्यक्ति को स्वस्थ रखना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है और इस दिशा के अंदर हम काम कर रहे हैं। आने वाले समय के अंदर निजी सहयोग से हर गांव में एक स्वास्थ्य कार्यकर्ता भी हम तैयार कर रहे हैं। उसके पास प्रारम्भिक इक्विपमेंट्स होंगे, बीपी मशीन होगी, खून जांचने के कुछ छोटे इक्विपमेंट्स होंगे। इसमें प्रारम्भिक इन्फ्रास्ट्रक्चर की आवश्यकता होती है। ट्रेनिंग के बाद वे इसकी जानकारी प्राप्त करें और गम्भीर बीमारी का संकेत देखकर उसे रेफर कर सकें, पास के मेडिकल कॉलेज में रेफर कर सकें, अस्पताल में रेफर कर सकें, सीएचसी में और जांचें करा सकें, ताकि हर व्यक्ति स्वस्थ रहे।

यह हमारी जिम्मेदारी है। इसके लिए मुझे आपके सहयोग की आवश्यकता है। सरकारी स्तर भी सहयोग की आवश्यकता है, निजी स्तर पर भी सहयोग की आवश्यकता है। हम इतनी संवेदना के साथ काम करना चाहते हैं कि कोटा, बूंदी संसदीय क्षेत्र चिकित्सा के रूप में एक मॉडल संसदीय क्षेत्र बने, ताकि हम देश को बता सकें कि किस तरीके से हमने सबको स्वस्थ रखने के लिए व्यापक अभियान शुरू किया है। इसी तरह से आने वाले समय में जितने भी स्कूल के बच्चे हैं, उन सारे बच्चों का मेडिकल चेक अप करायेंगे। कई बार मैंने देखा कि प्रारंभिक जानकारी के अभाव में वे इलाज नहीं करा पाते हैं या धन के अभाव के कारण बच्चों का इलाज नहीं करा पाते हैं।

इसलिए सारे स्कूलों में मेडिकल जांच भी करायेंगे और जांच में जो गम्भीर मरीज नजर आएगा, उसका इलाज करायेंगे। कुछ आपके सहयोग से करायेंगे, कुछ जन-सहयोग से करायेंगे। हर व्यक्ति स्वस्थ रहे, यह हमारी नैतिक जिम्मेदारी है।

मैं इस मौके पर आप सबको धन्यवाद देता हूं। आपने कोरोना के समय अथक प्रयासों से इस मेडिकल कॉलेज में लाखों लोगों की जिंदगी को बचाने का पुण्य काम किया। मैं देखता था कि रात भर, रात भर में कोई चिकित्सक कभी भी कोई चीज के लिए न नहीं करता था।

वहीं इमीडिएटली कोरोना की द्वितीय लहर में, जो बहुत गम्भीर, घातक थी, उसमें भी कई चिकित्सकों ने अपनी रातें हॉस्पिटल कैंपस में बिताई हैं।

हमारे कई अटेंडेंट्स, स्वीपर्स, छोटे-से-छोटे कर्मचारी ने भी अपनी सेवायें दी हैं। कई बार तो उनके परिवार के लोग नहीं आते थे, लेकिन अटेंडेंट, सफाईकर्मी उनकी सेवा करने का काम करते थे। वे सब धन्यवाद के पात्र हैं।

हम सबका एक ही प्रयास और कोशिश है कि हर व्यक्ति स्वस्थ रहे और स्वस्थ रखने के लिए जो कुछ भी हमारे प्रयास हो सकते हैं, उन प्रयासों को हम करें।

आने वाले समय में दुनिया में जो नए रिसर्च हो रहे हैं, नए शोध हो रहे हैं, उनकी जानकारी हमारे पास होनी चाहिए। दुनिया भर की रिसर्चों से हमारी कनेक्टिविटी होनी चाहिए। आज कल यहां बैठकर दुनिया के अंदर हो रही रिसर्च, नई टेक्नोलॉजी, नई बीमारियों के इलाज की जानकारी यहां पर प्राप्त कर सकते हैं। मेडिकल कॉलेज में आपको क्योंकि अध्ययन अध्यापन का कार्य भी करना पड़ता है, इसलिए नई बीमारियों से आपको अपडेट भी होना पड़ता है। मैं चाहूंगा कि यहां पर एक छोटी रिसर्च यूनिट बने, लैब भी बने। यदि उसके लिए कोई आवश्यकता होगी, तो मैं पूरी मदद करूंगा।

देश और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जो बड़े संस्थान हैं, उनसे हमारी कनेक्टिविटी हो जाए, ताकि आने समय में गांव के अंदर भी टेलीमेडिसिन को जोड़कर, हर सीएचसी, पीएचसी को मेडिकल कॉलेज के साथ जोड़ने का एक व्यापक संवाद का एक केंद्र स्थापित कर सकें। गरीब व्यक्ति, जो सीएचसी में पहुंच जाए, आप कम से कम उसको एक घंटा दे दो, ताकि उससे बातचीत हो सके, उसकी जो कुछ भी जांचें हैं, उसके आधार पर उसका इलाज कर सकें, ताकि हम समाज के अंतिम पायदान में बैठे व्यक्ति को भी स्वस्थ रख सकें। आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद।